Name :- Sawikumar
class :- B.A III year
Deptt :- Sanskrit

तत्पुरुषसमास

द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः

प्रस्तुत सूत्र वरदराज विरचित लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास प्रकरण के अन्तर्गत तत्पुरुषसमास का एक विधि सूत्र है। सूत्र के अर्थ की स्पष्टीकरण के लिए प्राक्कडारात समासः, सह सुपा और तत्पुरुषः की अनुवृत्ति करते हैं और इस प्रकार सूत्र का अर्थ होगा —— द्वितीयान्त पद का श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न इन प्रातिपदिकों से बने सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है और उसकी तत्पुरुष संज्ञा होती है।

उदा० — 'कृष्णं श्रितः (कृष्ण के आश्रित) में कृष्ण शब्द द्वितीयान्त है अतः 'श्रित' के साथ समास होने पर 'सु' विभक्ति में 'कृष्णश्रितः' रूप बनता है।

इसी प्रकार अन्य भी होंगे।

रूपसिद्धि

कृष्णाश्रितः

लौ० वि० — कृष्णं श्रितः
अलौ० वि० — कृष्ण अम् श्रित सु

ऐसा विग्रह करने पर द्वितीया श्रितातीतगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः सूत्र से द्वितीयान्त 'कृष्णम् का श्रित' के साथ समास होने पर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से द्वितीयान्त 'कृष्णम्' का 'श्रित' के साथ समास होने पर 'कृत्तद्धितसमासश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा होने के पश्चात 'सुपोधातु-प्रातिपदिकयोः' से सुप (अम और सु) का लोप होकर रूप बना — कृष्ण श्रित। इस स्थिति में प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से 'कृष्ण' की उपसर्जन संज्ञा होने पर 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग होकर रूप बना — कृष्ण श्रित / कृष्णाश्रित बाद की पुनः 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से प्रातिपदिक संज्ञा हो तथा स्वौजसमौट्' से सु विभक्ति आने पर 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से उ की इत्संज्ञा होने के बाद तस्य लोपः से उसका लोप हो पुनः 'ससजुषो रुः' से स् को रु आदेश होने पर उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से उ लोप होने के बाद तस्य लोपः से 'उ' का लोप होने पर 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' से र् का विसर्ग (ः) होकर रूप सिद्ध होता है —

कृष्णाश्रितः

तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन

यह एक समास प्रकरण के तत्पुरुष समास का एक विधि सूत्र है। इसमें भी सूत्र के अर्थ की स्पष्टता के लिए प्राक्कडारात्समासः, सह सुपा और तत्पुरुषः की अनुवृत्ति करते हैं। प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् इस परिभाषा के अनुसार 'तृतीया' से तृतीयान्त पद का ग्रहण होता है। अतः सूत्र का अर्थ है — तृतीयान्त का उसके द्वारा किये गए गुणवाचक शब्द के साथ एवम् अर्थ शब्द के साथ समास होता है।

उदा० — शङ्कुलाखण्डः (सरौते से किया गया टुकड़ा)
धान्यार्थः (धान्य से प्रयोजन)

इस सूत्र में तत्कृत इस लिए कहा गया है क्योंकि ऐसा कहने से 'अक्ष्णा काणः (आँख से काना) में समास विधान नहीं होगा क्योंकि काणत्व विधान नहीं हुआ है अपितु रोगादि से आँख कानी हो गई है। इस प्रकार अक्ष्णा 'और काणः में कारण कार्य सम्बन्ध नहीं होने से यहाँ समास नहीं होगा।

रूप सिद्धि

Name:- Soni kumari
class:- B.A III year
Deptt:- Sanskrit

शङ्कुलाखण्डः

लौ० वि० — शङ्कुलया खण्डः
अलौ० वि० — शङ्कुला टा खण्ड सु

ऐसा विग्रह होने पर तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से तृतीयान्त 'शङ्कुला' का प्रथमान्त 'खण्ड' के साथ समास होने पर, 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा होने के फलस्वरूप 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप (टा और सु) का लोप होने पर 'शङ्कुलाखण्ड' रूप बना। इस स्थिति में 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'शङ्कुला' की उपसर्जन संज्ञा होने पर 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग होने पर 'शङ्कुलाखण्ड' की पुनः प्रातिपदिक संज्ञा हो एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से होने पर 'स्वौजसमौट्' से सु का आगम होने के बाद रूप बना — शङ्कुलाखण्ड सु। इस स्थिति में ससजुषो रुः से सु के (स्) का रुत्व एवं खरवसानयोर्विसर्जनीयः से र् (रु) का विसर्ग हो रूप सिद्ध हुआ — शङ्कुलाखण्डः।

कर्तृकरणे कृता बहुलम्

प्रस्तुत सूत्र समास प्रकरण के तत्पुरुषसमास से उद्धृत है। यह विधि सूत्र है। इस सूत्र के अर्थ को स्पष्टीकरण के लिए प्राक्कडारात्समासः, सह सुपा, तत्पुरुषः तथा तृतीया 'तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' से 'तृतीया' की अनुवृत्ति करते हैं। प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् इस परिभाषा से तदन्तविधि होने के कारण 'तृतीया' से 'तृतीयान्त' और 'कृत' से कृदन्त का बोध होता है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ होगा —— तृतीयान्त कर्ता और करण का कृदन्त (जिसके अन्त में कृत्प्रत्यय हो) पद के साथ बहुलता अर्थात विकल्प से समास होता है।

उदा० —— हरिणा त्रातः (हरि से रक्षा किया हुआ) इस विग्रह में हरि तृतीयान्त कर्ता है और त्रातः (त्रा न क्त) कृदन्त पद है। अतः प्रकृत सूत्र से समास होने पर ~~हरि~~ 'हरित्रातः' पद बना है।

रूपसिद्धि

हरित्रातः

लौ० वि० — हरिणा त्रातः
अलौ० वि० — हरि टा त्रात सु
ऐसा विग्रह होने पर 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' से कृदन्त 'त्रात' का कर्तृ पद 'हरि' के साथ समास होने पर कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा होने के फलस्वरूप 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (टा और सु) का लोप हो रूप बना — हरित्रात रूप बना। इस स्थिति में प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से हरि की उपसर्जन संज्ञा होने पर 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग होने के बाद रूप बना — हरित्रात पुनः एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर 'स्वौजसमौट' से सु आने पर उकार की इत्संज्ञा एवं लोप हो बाद 'स' का रुत्व ससजुषो रुः से होने पर र (रु) का खरवसानयोर्विसर्जनीयः से विसर्ग हो रूप सिद्ध हुआ —

हरित्रातः